Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
October to December 2025, E-Journal, Vol. I, Issue LII (52), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

अलवर जिले में वर्ष 2005–06 से 2018–19 के मध्य विद्यालयों के विकास का प्रतिरूप

नीतू चौधरी* डॉ. विजय कुमार वर्मा **

* शोधार्थी (भूगोल) राजऋषि भृतहरि मत्स्य विश्वविद्यालय, अलवर (राज.) भारत
** आचार्य, बाबू शोभाराम राजकीय कला महाविद्यालय, अलवर (राज.) भारत

शोध सारांश – शिक्षा के बुनियादी ढांचे का विकास किसी क्षेत्र की सामाजिक व आर्थिक प्रगति का महत्वपूर्ण संकेतक होता है। प्रस्तुत शोध में राजस्थान के अलवर जिले में वर्ष 2005–06 से 2018–19 तक प्राथमिक, उच्च प्राथमिक एवं माध्यमिक/उच्च माध्यमिक विद्यालयों की संख्या में हुए परिवर्तनों का विश्लेषण किया गया है। यह अध्ययन जिला सांख्यिकी रूपरेखा 2007, 2012, 2017 व 2020 से प्राप्त द्वितीयक आँकड़ों पर आधारित है।परिणामों से स्पष्ट होता है, कि जिले में प्राथमिक विद्यालयों की संख्या में समग्र रूप से गिरावट दर्ज की गई है, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में, इसके विपरीत उच्च प्राथमिक विद्यालयों की संख्या में वृद्धि देखी गई, विशेषकर 2010–11 के बाद। माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों की संख्या में प्रारंभिक तीव्र वृद्धि के बाद एक गिरावट देखी गई।उपखण्डवार विश्लेषण से पता चलता है कि विद्यालयों की वृद्धि या गिरावट क्षेत्र विशेष की भौगोलिक, प्रशासनिक और नीति संबंधी परिस्थितियों पर निर्भर रही। नगरीय क्षेत्रों में शिक्षा ढांचे में कुछ समय तक वृद्धि दिखी, लेकिन बाद में वहाँ भी गिरावट देखी गई। यह अध्ययन स्पष्ट करता है कि अलवर जिले में शिक्षा विकास की गति असमान रही है और शैक्षिक योजनाओं के क्रियान्वयन में समयबद्धता, संतुलन एवं निगरानी की आवश्यकता है।

शब्द कुंजी – प्राथमिक विद्यालय, उच्च प्राथमिक विद्यालय, माध्यमिक विद्यालय, शैक्षिक विकास, ग्रामीण शिक्षा और शिक्षा नीति।

प्रस्तावना – शिक्षा किसी भी समाज और राष्ट्र की प्रगति का आधार स्तंभ होती है। यह न केवल मानव संसाधन का विकास करती है, बल्कि सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक उन्नति का मार्ग भी प्रशस्त करती है। भारत में शिक्षा के क्षेत्र में लगातार सुधार और विकास को सर्वोच्च प्राथमिकता दी गई है, जिसके तहत विभिन्न नीतियों और योजनाओं के माध्यम से शिक्षा तक पहुँच, गुणवत्ता और बुनियादी ढाँचे को मजबूत करने के प्रयास किए गए हैं।

राजस्थान के सिंहद्वार अलवर जिले में भी शिक्षा के स्तर को उन्नत करने के लिए कई महत्वपूर्ण कदम उठाए गए हैं, जिसमें समय के साथ नए विद्यालयों की स्थापना और प्राथमिक, उच्च प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालयों को क्रमोन्नत करना सम्मिलित है, जिसके कारण समय-समय पर विद्यालयों की संख्या में परिवर्तन देखने को मिलता है। यह अध्ययन विशेष रूप से वर्ष 2005–06 से 2018–19 की अवधि पर केंद्रित है, जो कि शिक्षा के क्षेत्र में अनेक महत्वपूर्ण परिवर्तनों और सरकारी पहलों का काल रहा है। इस दौरान, शिक्षा का अधिकार अधिनियम (RTE) 2009 जैसे ऐतिहासिक कानून लागू हुए, जिससे प्राथमिक शिक्षा को मौलिक अधिकार बनाया गया। साथ ही, सर्व शिक्षा अभियान और राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान (RMSA) जैसी योजनाओं ने विद्यालयों के बुनियादी ढाँचे, नामांकन और शैक्षणिक गुणवत्ता में सुधार लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

साहित्य पुनरावलोकन – शोधार्थी द्वारा यहाँ प्रस्तुत शोधकार्य से संबंधित पूर्व में किए गए शोधकार्यों की समीक्षा प्रस्तुत की गई है, यथा–

बिश्वास और अग्रवाल, (1986)[1] के अनुसार भारत में शिक्षा का विकास केवल साक्षरता बढ़ाने तक सीमित नहीं रहा है। यह स्वतंत्रता के पहले और बाद से ही सामाजिक परिवर्तन और राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया का एक अभिन्न हिस्सा रहा है।

दास, (2011)[2] के अनुसारप्राथमिक स्तर पर बच्चों के स्कूल छोड़ने (Out-of-School) के पीछे सामाजिक-आर्थिक कारक और क्षेत्रीय असमानताएँ मुख्य कारण हैं। विशेष रूप से गरीब और ग्रामीण पृष्ठभूमि के बच्चों में 'ड्रॉप-आउट' दर अधिक देखी गई है।

ओहलान, (2013)[3] ने उल्लेख किया है कि शिक्षा और क्षेत्रीय प्रगति के बीच सीधा संबंध है। इसके शोध के अनुसार, जिन जिलों में शैक्षणिक स्तर बेहतर है, वहां सामाजिक-आर्थिक विकास भी अधिक हुआ है, जो शिक्षा को विकास का एक प्रमुख संकेतक सिद्ध करता है।

रानी, (2007)[4] ने अपने शोध में उल्लिखित किया है किमाध्यमिक शिक्षा के विस्तार के बावजूद आज भी क्षेत्रीय और सामाजिक स्तर पर काफी असमानताएँ मौजूद हैं। इन चुनौतियों से निपटने के लिए शिक्षा नीति में समावेशी दृष्टिकोण अपनाना अनिवार्य है।

तिलक और घोष, (2018)[5] के अनुसारशिक्षा केवल 'मानव पूंजी' बनाने का साधन नहीं है, बल्कि यह आर्थिक उत्पादकता, सामाजिक सशक्तिकरण और लोकतंत्र को मजबूत करने का आधार है।

अध्ययन क्षेत्र – भौतिक दृष्टि से अलवर जिला उत्तरी अरावली पर्वतीय प्रदेश में अवस्थित है, वहीं प्रशासनिक दृष्टि से यह जिला भारत के पश्चिम में अवस्थित राजस्थान राज्य के उत्तर-पूर्वी भाग में स्थित है। अलवर जिला $27^0 4'$ उत्तरी अक्षांश से $28^0 4'$ उत्तरी अक्षांश तथा $76^0 7'$ पूर्वी से $77^0 13'$ पूर्वी देशान्तर के मध्य विस्तारित है। अलवर जिले का उत्तर से दक्षिणी विस्तार

137 कि.मी. और पूर्व से पश्चिमी दिशा में 110 कि.मी. है। जिले का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 8380 वर्ग कि.मी. है, जो राज्य के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 3,42,239 वर्ग कि.मी. का 2.45 प्रतिशत भाग है।इसकी समुद्र तल से औसत ऊँचाई 271 मीटर (889 फीट) है। जिले के अधिकांश क्षेत्र पर अरावली की पहाड़ियों का विस्तार है। ये पहाड़ियाँ थानागाजी, राजगढ़ तहसीलों में अधिक विस्तारित है। जिले में साबी, रूपारेल, चुहडसिद्ध आदि प्रमुख मौसमी नदियाँ प्रवाहित होती हैं। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार अलवर जिले की कुल जनसंख्या 36,74,179 है, जिसमें 1939026 पुरुष एवं 1735153 स्त्रियाँ है। इसी प्रकार यहाँ अनुसूचित जाति एवं जनजाति की जनसंख्या क्रमश: 653036 व 289249 अर्थात् 17.77 प्रतिशत व 7.87 प्रतिशत है।

मानचित्र–1

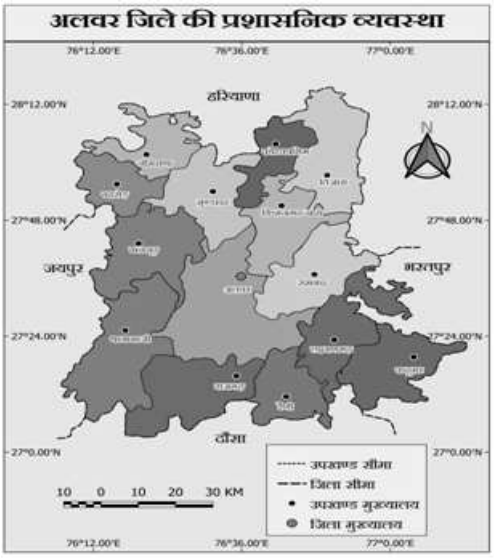

शोध उद्देश्य – प्रस्तुत शोध के उद्देश्य निम्नलिखित हैं, यथा–

1. अलवर जिले में शिक्षा के विकास के प्रतिरूप का विश्लेषण करना।
2. अलवर जिले में विद्यालयों की संख्या में समय के साथ हुए परिवर्तनों का सूक्ष्म अवलोकन प्रस्तुत करना।

शोध परिकल्पना – प्रस्तुत शोध हेतु निम्न शोध परिकल्पनाओं का निर्धारण किया गया है, यथा–

1. अलवर जिले में शैक्षिक बुनियादी ढांचे का विकास ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में नगरीय क्षेत्रों में अधिक अस्थिर रहा है, जो शहरीकरण और निजी विद्यालयों की बढ़ती प्रतिस्पर्धा को दर्शाता है।
2. वर्ष 2010 के पश्चात उच्च प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालयों की संख्या में हुई वृद्धि, शिक्षा के अधिकार (RTE–2009) और श्सर्व शिक्षा अभियानश के नीतिगत हस्तक्षेपों का परिणाम है।

आँकड़ों का स्रोत एवं शोध विधि – यह शोधपत्र द्वितीयक आंकड़ों पर आधारित है, ये आँकड़ें जिला सांख्यिकी रूपरेखा, जिन्हें जिला सांख्यिकी विभाग, अलवर द्वारा जारी किया जाता है, से प्राप्त किये गए हैं। ये आँकड़ें 2005–06 से 2018–19 के मध्य प्रत्येक 5 वर्ष के अंतराल पर संकलित किये गए हैं। प्रस्तुत शोध एक गुणात्मक और मात्रात्मक दृष्टिकोण का मिश्रित अध्ययन है। इस शोध में वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक दोनों प्रकार की विधियों का उपयोग किया गया है।

शोध परिणाम एवं परिचर्चा – तालिका–1 में उल्लिखित आंकड़ों का विश्लेषण करने पर स्पष्ट होता है, कि वर्ष 2005–06 से 2018–19 के मध्य अलवर जिले के विभिन्न उपखण्डों में प्राथमिक विद्यालयों की संख्या में समग्र रूप से कमी दर्ज की गई है। वर्ष 2005–06 में जिले में कुल 2612 प्राथमिक विद्यालय संचालित हो रहे थे, जिनकी संख्या वर्ष 2010–11 में घटकर 2354 (9.88%) रह गई। इसके बाद वर्ष 2015–16 में यह संख्या 1410 (40.10%) पर पहुँच गई और 2018–19 तक यह और घटकर 1298 (7.94%) हो गई। यह गिरावट अधिकांशत: ग्रामीण क्षेत्रों में देखी गई है, जबकि नगरीय क्षेत्रों में एक समयावधि तक वृद्धि के संकेत भी प्राप्त हुए हैं।

ग्रामीण उपखण्डों की बात करें तो उमरैण में वर्ष 2005–06 में 201 विद्यालय थे, जो 2018–19 में घटकर 164 (18.41%) रह गए। कठूमर में यह संख्या 198 से घटकर 84 (57.58%) हो गई। किशनगढ़ बास में 156 विद्यालय थे जो 2018–19 में मात्र 68 (56.41%) बचे। इसी प्रकार कोटकासिम में विद्यालयों की संख्या 97 से घटकर 47 (51.55%) हो गई। तिजारा में वर्ष 2005–06 की तुलना में भारी गिरावट (42.60%) 2010–11 तक देखी गई, लेकिन इसके बाद थोड़ी वृद्धि हुई और अंतत: यह संख्या 154 पर आकर ठहरी, जो 2005–06 की तुलना में कुल मिलाकर 44.40% की कमी को दर्शाती है।

थानागाजी, नीमराणा और बहरोड़ में भी विद्यालयों की संख्या में उल्लेखनीय उतार–चढ़ाव हुआ। थानागाजी में 187 से घटकर 98 (47.59%) रह गए, जबकि नीमराणा में 83 से बढ़कर पहले 110 (32.53%) हुए परंतु 2018–19 तक मात्र 24 (71.08%) बचे। बहरोड़ में 124 विद्यालयों की संख्या घटकर 26 (79.03%) रह गई, परन्तु बाद में यह 56 (115.38%) तक बढ़ी, जो इस विकासखण्ड में आंशिक सुधार का संकेत देती है।

मण्डावर और राजगढ़ में भी इस अवधि में अस्थिरता देखी गई। मण्डावर में 135 विद्यालयों की संख्या पहले बढ़कर 150 (11.11%) हुई, लेकिन फिर घटकर 79 (47.41%) रह गई। वहीं राजगढ़ में पहले 194 विद्यालय थे, जो घटकर 104 (46.39%) हुए, परन्तु बाद में इनमें आंशिक वृद्धि होकर यह संख्या 121 (16.35%) पर पहुँची। रामगढ़ में भी लगातार गिरावट देखने को मिली और विद्यालयों की संख्या 202 से घटकर 104 (48.51%) रह गई। रैणी में भी स्थिति कुछ ऐसी ही रही जहाँ 156 विद्यालयों की संख्या घटकर 57 (63.46%) हो गई। लक्ष्मणगढ़ में 219 विद्यालयों की संख्या वर्ष 2018–19 में मात्र 78 (64.38%) रह गई।कुल मिलाकर ग्रामीण क्षेत्रों में प्राथमिक विद्यालयों की संख्या 2454 से घटकर 1231 (49.83%) हो गई, जबकि नगरीय क्षेत्रों में 158 से पहले 254 (60.76%) तक वृद्धि हुई, लेकिन बाद में यह संख्या घटकर 67 (58.07%) हो गई। इस प्रकार पूरे अलवर जिले में प्राथमिक विद्यालयों की कुल संख्या वर्ष 2005–06 में 2612 से घटकर वर्ष 2018–19 में 1298 (50.31%) रह गई, जो यह संकेत देता है, कि जिले में प्राथमिक शिक्षा के बुनियादी ढांचे में गिरावट आई है।

तालिका 1 (अन्तिम पृष्ठ पर देखे)

आरेख–1 (अन्तिम पृष्ठ पर देखे)

तालिका–2 में उल्लिखित आंकड़ों के अनुसार वर्ष 2005–06 से 2018–19 तक अलवर जिले में उच्च प्राथमिक विद्यालयों की संख्या में समग्र रूप से वृद्धि देखी गई, जहाँ विद्यालयों की कुल संख्या 2087 से बढ़कर 2598

(24.48%) हो गई। हालांकि, यह वृद्धि एक समान नहीं रही। आरंभिक पाँच वर्षों में विद्यालयों की संख्या 1741 (-16.58%) पर घट गई थी, परंतु 2015-16 में यह 2532 (45.43%) तक पहुँची और फिर 2018-19 में आंशिक वृद्धि के साथ 2598 (2.61%) तक पहुँच गई।

ग्रामीण क्षेत्रों में कुल विद्यालयों की संख्या 1710 से घटकर 1644 (-3.86%) हो गई थी, लेकिन इसके बाद 2015-16 में यह 2054 (24.94%) तक पहुँची और 2018-19 में मामूली वृद्धि के साथ 2094 (1.95%) हो गई। नगरीय क्षेत्रों में 2005-06 में 377 विद्यालय थे, जो 2010-11 में घटकर 97 (-74.27%) रह गए, परन्तु 2015-16 में तेजी से बढ़कर 478 (392.78%) हो गए और 2018-19 में 504 (5.44%) पर पहुँच गए।

तालिका 2 (अन्तिम पृष्ठ पर देखे)

आरेख 2 (अन्तिम पृष्ठ पर देखे)

विकासखण्ड स्तर पर देखा जाए तो उमरैण में विद्यालयों की संख्या 101 से बढ़कर 247 (144.55%) हो गई, जबकि कोटकासिम में 111 से घटकर 84 (24.32%) रह गई। तिजारा, मण्डावर, थानागाजी, रैणी, लक्ष्मणगढ़ और बहरोड़ जैसे क्षेत्रों में कुल मिलाकर विद्यालयों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि हुई, विशेषकर मण्डावर में 146 से 174 (19.18%) और थानागाजी में 99 से 198 (100.00%) तक वृद्धि देखी गई। दूसरी ओर, बानसूर और राजगढ़ में विद्यालयों की संख्या में क्रमशः 169 से 96 (-43.20%) और 95 से 89 (-6.32%) तक गिरावट हुई।

तालिका संख्या-3 के अनुसार वर्ष 2005-06 से 2018-19 तक अलवर जिले में माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों की संख्या में कुल मिलाकर उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की गई, हालांकि, यह वृद्धि एक समान नहीं रही। वर्ष 2005-06 में जिले में कुल 693 विद्यालय थे, जो 2010-11 में बढ़कर 1477 (113.13%) हो गए, फिर 2015-16 में 1670 (13.07%) तक पहुँचे, लेकिन 2018-19 में इनकी संख्या घटकर 1406 (-15.81%) रह गई।

तालिका 3 (अन्तिम पृष्ठ पर देखे)

आरेख 3 (अन्तिम पृष्ठ पर देखे)

ग्रामीण क्षेत्रों में विद्यालयों की संख्या 569 से बढ़कर 2010-11 में 1229 (115.99%) हो गई थी, फिर 2015-16 में 1452 (18.14%) तक पहुँची, लेकिन इसके बाद 2018-19 में यह घटकर 1238 (-14.74%) रह गई। वहीं नगरीय क्षेत्रों में 2005-06 में 124 विद्यालय थे, जो 2010-11 में 248 (100.00%) हो गए, परंतु 2015-16 में घटकर 218 (-12.10%) और फिर 2018-19 में घटकर 168 (-22.94%) हो गए। विकासखण्ड स्तर पर देखा जाए तो अधिकांश क्षेत्रों में 2005-06 से 2010-11 के बीच विद्यालयों की संख्या में तीव्र वृद्धि हुई, जैसे बानसूर में 42 से 139 (230.95%), नीमराणा में 39 से 101 (158.97%), मण्डावर में 53 से 128 (141.51%) और थानागाजी में 40 से 97 (142.50%) हो गई। इसके बाद अधिकांश क्षेत्रों में विद्यालयों की संख्या में गिरावट देखने को मिली, विशेषतः मण्डावर में 2015-16 में 143 से घटकर 2018-19 में 87 (-39.16%) रह गई। किशनगढ़ बास, लक्ष्मणगढ़ और बानसूर में भी इसी प्रकार की गिरावट दर्ज की गई। केवल रैणी विकासखण्ड में 2005-06 से लगातार वृद्धि देखने को मिली, जहाँ विद्यालयों की संख्या 29 से बढ़कर 87 (200.00%) हो गई।

निष्कर्ष - वर्ष 2005-06 से 2018-19 तक अलवर जिले में प्राथमिक विद्यालयों की संख्या में समग्र रूप से गिरावट दर्ज की गई, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में, जबकि नगरीय क्षेत्रों में अस्थायी वृद्धि के बाद गिरावट आई, जिसका मुख्य कारण विद्यालयों का उन्नयीकरण/ क्रमोन्नति रहा। उच्च प्राथमिक विद्यालयों की संख्या में भी वृद्धि हुई, जिसमें प्रारंभिक गिरावट के पश्चात नगरीय क्षेत्रों में तीव्र वृद्धि और ग्रामीण क्षेत्रों में स्थिर वृद्धि देखी गई। माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों में भी पर्याप्त वृद्धि दर्ज की गई, परन्तु वर्ष 2015-16 के बाद इनमें कमी आने लगी। विकासखण्ड स्तर पर विभिन्न क्षेत्रों में विद्यालयों की संख्या में भिन्नता देखी गई, जहाँ कुछ क्षेत्रों में निरंतर वृद्धि हुई, वहीं कुछ क्षेत्रों में 2015 के बाद गिरावट दर्ज की गई। यह परिदृश्य दर्शाता है, कि जिले में शिक्षा के बुनियादी ढांचे में असंतुलन है, जो क्षेत्रीय, प्रशासनिक और नीतिगत कारणों से प्रभावित हुआ है। अतः क्षेत्र में शैक्षिक नीतियों के क्रियान्वयन में समयबद्धता व निगरानी के साथ-साथ क्षेत्रीय संतुलन पर ध्यान देने की आवश्यकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. Biswas, A., & Agrawal, S. P. (1986). Development of education in India% A historical survey of educational documents before and after independence. Concept publishing company.
2. Das, A. (2011). Exploring the pattern and determinants out-of-schools atelementary level in India. International Journal of Child and AdolescentHealth, 4(2), 191.
3. Ohlan, R. (2013). Pattern of regional disparities in socio-economic development in India% District level analysis. Social indicators research, 114, 841-873.
4. Rani, P. G. (2007, January). Secondary education in India% Development and performance. In43rd Annual Conference of the Indian Econometric Society, IIT, Mumbai (pp. 5-7)
5. Tilak, J. B., Tilak, J. B., & Ghosh. (2018). Education and development in India. Palgrave Macmillan

तालिका 1: अलवर जिले में प्राथमिक विद्यालयों के विकास का प्रतिरूप, वर्ष 2005-06 से 2018-19

विकासखण्ड	प्राथमिक विद्यालय						
	2005-06	2010-11		2015-16		2018-19	
	विद्यालयों की संख्या	विद्यालयों की संख्या	वर्ष 2005-06 की तुलना में वृद्धि	विद्यालयों की संख्या	वर्ष 2010-11 की तुलना में वृद्धि	विद्यालयों कीसंख्या	वर्ष 2015-16 की तुलना में वृद्धि
उमरैण	201	171	-14.93%	166	-2.92%	164	-1.20%
कठूमर	198	160	-19.19%	96	-40.00%	84	-12.50%
किशनगढ़ बास	156	151	-3.21%	97	-35.76%	68	-29.90%
कोटकासिम	97	84	-13.40%	47	-44.05%	47	0.00%
तिजारा	277	159	-42.60%	170	6.92%	154	-9.41%
थानागाजी	187	171	-8.56%	120	-29.82%	98	-18.33%
नीमराणा	83	110	32.53%	33	-70.00%	24	-27.27%
बहरोड़	124	116	-6.45%	26	-77.59%	56	115.38%
बानसूर	225	169	-24.89%	127	-24.85%	97	-23.62%
मण्डावर	135	150	11.11%	54	-64.00%	79	46.30%
राजगढ़	194	168	-13.40%	104	-38.10%	121	16.35%
रामगढ़	202	184	-8.91%	131	-28.80%	104	-20.61%
रैणी	156	142	-8.97%	44	-69.01%	57	29.55%
लक्ष्मणगढ़	219	165	-24.66%	112	-32.12%	78	-30.36%
कुल ग्रामीण	2454	2100	-14.43%	1327	-36.81%	1231	-7.23%
कुल नगरीय	158	254	60.76%	83	-67.32%	67	-19.28%
कुल अलवर	2612	2354	-9.88%	1410	-40.10%	1298	-7.94%

स्रोत: जिला सांख्यिकी रूपरेखा, वर्ष 2007, 2012, 2017 एवं 2020

आरेख-1

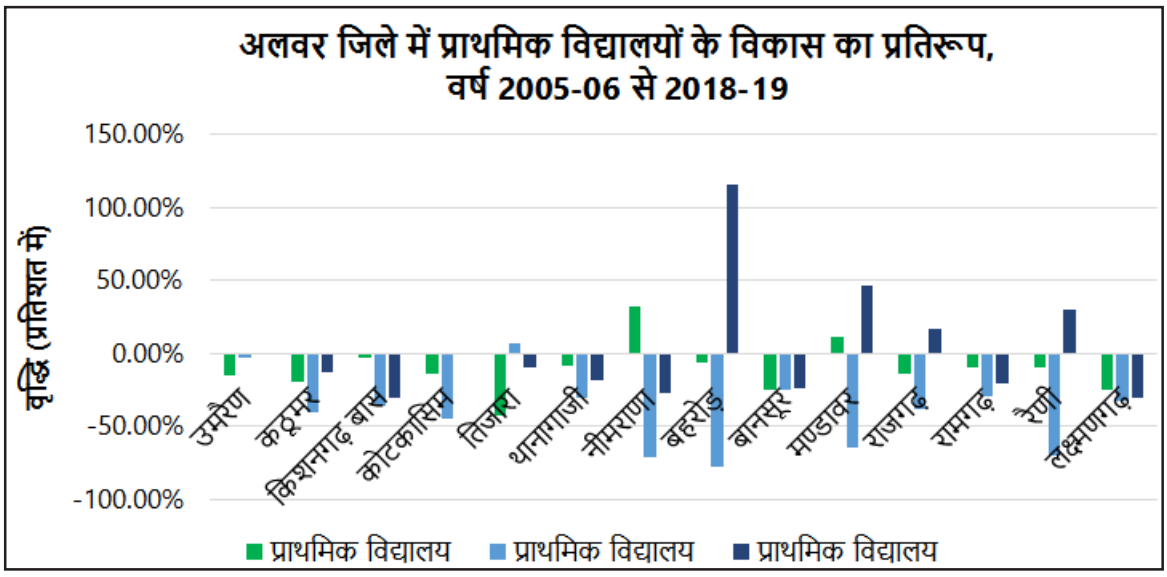

तालिका 2: अलवर जिले में उच्च प्राथमिक विद्यालयों के विकास का प्रतिरूप, वर्ष 2005-06 से 2018-19

विकासखण्ड	उच्च प्राथमिक विद्यालय						
	2005-06	2010-11		2015-16		2018-19	
	विद्यालयों की संख्या	विद्यालयों की संख्या	वर्ष 2005-06 की तुलना में वृद्धि	विद्यालयों की संख्या	वर्ष 2010-11 की तुलना में वृद्धि	विद्यालयों कीसंख्या	वर्ष 2015-16 की तुलना में वृद्धि
उमरैण	101	144	42.57%	295	104.86%	247	-16.27%
कठूमर	150	130	-13.33%	144	10.77%	147	2.08%
किशनगढ़ बास	100	100	0.00%	154	54.00%	147	-4.55%
कोटकासिम	111	68	-38.74%	66	-2.94%	84	27.27%
तिजारा	127	193	51.97%	185	-4.15%	147	-20.54%
थानागाजी	99	134	35.35%	169	26.12%	198	17.16%
नीमराणा	108	55	-49.07%	83	50.91%	88	6.02%
बहरोड़	119	54	-54.62%	117	116.67%	147	25.64%
बानसूर	169	170	0.59%	124	-27.06%	96	-22.58%
मण्डावर	146	88	-39.73%	129	46.59%	174	34.88%
राजगढ़	95	105	10.53%	154	46.67%	89	-42.21%
रामगढ़	131	147	12.21%	172	17.01%	187	8.72%
रैणी	94	92	-2.13%	119	29.35%	159	33.61%
लक्ष्मणगढ़	160	164	2.50%	143	-12.80%	184	28.67%
कुल ग्रामीण	1710	1644	-3.86%	2054	24.94%	2094	1.95%
कुल नगरीय	377	97	-74.27%	478	392.78%	504	5.44%
कुल अलवर	2087	1741	-16.58%	2532	45.43%	2598	2.61%

स्रोत: जिला सांख्यिकी रूपरेखा, वर्ष 2007, 2012, 2017 एवं 2020

आरेख 2

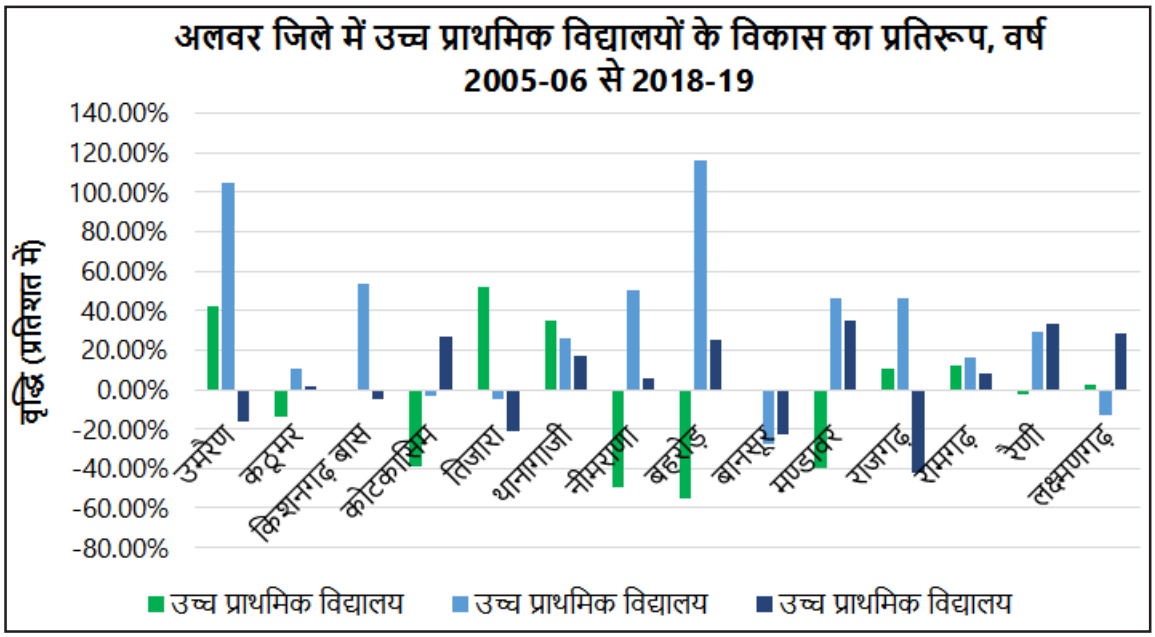

तालिका 3: अलवर जिले में माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिकविद्यालयों के विकास का प्रतिरूप, वर्ष 2005-06 से 2018-19

विकासखण्ड	माध्यमिक एवं उच्चमाध्यमिक विद्यालय						
	2005-06	2010-11		2015-16		2018-19	
	विद्यालयों की संख्या	विद्यालयों की संख्या	वर्ष 2005-06 की तुलना में वृद्धि	विद्यालयों की संख्या	वर्ष 2010-11 की तुलना में वृद्धि	विद्यालयों कीसंख्या	वर्ष 2015-16 की तुलना में वृद्धि
उमरैण	38	81	113.16%	106	30.86%	87	-17.92%
कठूमर	50	99	98.00%	125	26.26%	114	-8.80%
किशनगढ़ बास	43	55	27.91%	77	40.00%	56	-27.27%
कोटकासिम	38	68	78.95%	74	8.82%	69	-6.76%
तिजारा	43	94	118.60%	108	14.89%	101	-6.48%
थानागाजी	40	97	142.50%	98	1.03%	85	-13.27%
नीमराणा	39	101	158.97%	110	8.91%	106	-3.64%
बहरोड़	41	90	119.51%	98	8.89%	87	-11.22%
बानसूर	42	139	230.95%	143	2.88%	121	-15.38%
मण्डावर	53	128	141.51%	143	11.72%	87	-39.16%
राजगढ़	32	52	62.50%	73	40.38%	64	-12.33%
रामगढ़	35	76	117.14%	105	38.16%	87	-17.14%
रैणी	29	53	82.76%	74	39.62%	87	17.57%
लक्ष्मणगढ़	46	96	108.70%	118	22.92%	87	-26.27%
कुल ग्रामीण	569	1229	115.99%	1452	18.14%	1238	-14.74%
कुल नगरीय	124	248	100.00%	218	-12.10%	168	-22.94%
कुल अलवर	693	1477	113.13%	1670	13.07%	1406	-15.81%

स्रोत: जिला सांख्यिकी रूपरेखा, वर्ष 2007, 2012, 2017 एवं 2020

आरेख 3

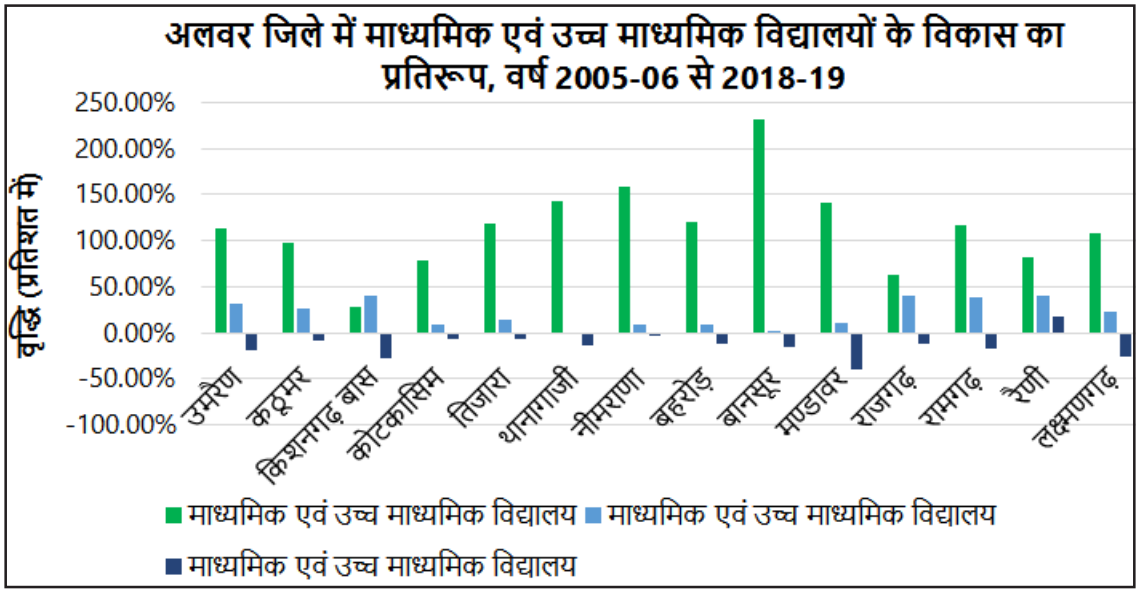

****